The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026 pp. 30-39

The Research Analytics
(A Peer Reviewed, Indexed and Open Access Journal)

4

"चंचल डोगरा की कविता में प्राकृतिक सौंदर्य और संवेदना: एक आलोचनात्मक अध्ययन"

बलवान सिंह
राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, जम्मू, ई-मेल: balwansingh494@gmail.com

Abstract
हिंदी काव्य परंपरा में प्रकृति सदैव एक महत्त्वपूर्ण विषय रही है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक कवियों ने प्रकृति को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। प्रकृति कभी सखी बनकर आई, कभी प्रेरणा-स्रोत, कभी प्रतीक और कभी करुणा की साक्षी। आज के बदलते सामाजिक और पर्यावरणीय परिदृश्य में प्रकृति का महत्व और भी बढ़ गया है। इसी संदर्भ में चंचल डोगरा की कविताएँ विशिष्ट महत्व रखती हैं।
चंचल डोगरा समकालीन हिंदी कविता की एक सशक्त कवयित्री हैं, जिनकी रचनाओं में स्त्री-जीवन की पीड़ा, संघर्ष, समाज की विसंगतियाँ और साथ ही प्रकृति का जीवंत चित्रण देखने को मिलता है। उनकी कविता में प्रकृति केवल दृश्य या सजावट नहीं बल्कि जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यह शोध-पत्र चंचल डोगरा की कविताओं में प्रकृति के सौंदर्य और संवेदनाओं की खोज करता है।
मुख्य शब्द (Keywords): *प्रकृति, प्राकृतिक सौंदर्य, सौंदर्यबोध, संवेदनशीलता, पर्यावरणीय चेतना, पेड़- पौधे, जीव-जंतु, मानव-प्रकृति संबंध|*

प्रस्तावना

हिंदी काव्य परंपरा में प्रकृति सदैव एक महत्त्वपूर्ण विषय रही है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक कवियों ने प्रकृति को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। प्रकृति कभी सखी बनकर आई, कभी प्रेरणा-स्रोत, कभी प्रतीक और कभी करुणा की साक्षी। आज के बदलते सामाजिक और पर्यावरणीय परिदृश्य में प्रकृति का महत्व और भी बढ़ गया है। इसी संदर्भ में चंचल डोगरा की कविताएँ विशिष्ट महत्व रखती हैं।

चंचल डोगरा समकालीन हिंदी कविता की एक सशक्त कवयित्री हैं, जिनकी रचनाओं में स्त्री-जीवन की पीड़ा, संघर्ष, समाज की विसंगतियाँ और साथ ही प्रकृति का जीवंत चित्रण देखने को मिलता है। उनकी कविता में प्रकृति केवल दृश्य या सजावट नहीं बल्कि जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यह शोध-पत्र चंचल डोगरा की कविताओं में प्रकृति के सौंदर्य और संवेदनाओं की खोज करता है।

चंचल डोगरा का परिचय

चंचल डोगरा का जन्म मुंबई में हुआ. उन्होंने एम.ए., पीएच. डी. तक की शिक्षा प्राप्त की और 'स्वातंत्रयोत्तर हिंदी काव्य में मनोवैज्ञानिक आयाम' - विषय पर शोध- कार्य संपूर्ण किया। कार्यक्षेत्र : अध्ययन, कविता,

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

शोध, जम्मू-कश्मीर राज्य के उच्च शिक्षा विभाग में प्राध्यापक तथा जम्मू व कश्मीर घाटी के महाविद्यालयों में प्राचार्य के पद पर कार्य तथा सेवानिवृत, रेडियो एवं टी.वी. से संबद्ध।

प्रकाशन:'अपने से अलग'(1992)'रूह तक पहुंचती है कविता' (2018)-कविता संग्रह,'स्वातंत्रयोत्तर हिंदी काव्य में मनोवैज्ञानिक आयाम' विषय पर शोध-प्रबंध, प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ,समीक्षाएँ व आलेख।

चंचल डोगरा का काव्य समकालीन हिंदी कविता में अपनी संवेदनशीलता, प्रखरता और सामाजिक सरोकारों के लिए जाना जाता है। उनकी कविताएँ मानवीय रिश्तों और प्राकृतिक दुनिया के बीच एक गहरा सेतु बनाती हैं। पहाड़ों, नदियों, पेड़ों, ऋतुओं, चिड़ियों, पशु-पक्षियों की उपस्थिति उनकी कविता में एक जीवंत अनुभव देती है। इस कारण उनका काव्य न केवल सौंदर्यपरक है बल्कि मानवीय और पारिस्थितिकीय चेतना से ओतप्रोत है।

प्रकृति का सौंदर्य: सौंदर्यबोध और सौंदर्यानुभूति

चंचल डोगरा की कविताओं में प्रकृति का सौंदर्य विविध रूपों में प्रकट होता है। कभी यह ऋतु-चित्रण के रूप में आता है और कभी पहाड़ों और नदियों के माध्यम से आता है। कभी यह छोटे-छोटे जीवों के माध्यम से व्यक्त होता है– गाय, बछड़ा, चिड़िया, गौरैया, तितली, शंख, घोंघे, सीपियाँ ये सब उनकी कविताओं के पात्र हैं-

"अभी तो; मैंने कुछ बीना ही नहीं-/ न शंख, न घोंघे, न सीपियाँ.... / और कुछ न सही;/ शंख तो बीन ही ले जाऊँगी/ अपने संग।" [1]

इनकी कविताओं में प्रकृति चित्रण की प्रवृत्ति पर **प्रसिद्ध कवि रमेश मेहता की यह टिप्पणी एकदम सटीक है-**

"कहीं देवदार और चीड़ आपस में गलबहियां डाले बतियाते और लुका-छुपी खेलते दिखाई देते हैं तो कहीं धुँध नाना रूप धर कर पाठकों को मोहित करती है। कहीं सागर हिलोरें मारता है तो कहीं सागर ज्ञान बघारता दिखाई देता है। यह वह कवितायें हैं जहाँ चंचल का मन अधिक रमता है और खुल कर खेलता है।" [2]

कवयित्री प्राकृतिक सौंदर्य और संवेदना का अत्यंत सजीव चित्रण प्रस्तुत करती हैं । 'झर रहे मौलश्री' कविता में रातभर मौलश्री का झरना, उसका निःशब्द गान और उसकी सुगंध से वातावरण का भर जाना, प्रकृति के एक अनूठे सौंदर्यलोक का निर्माण करता है। कवयित्री के भीतर यह अनुभव केवल बाहरी दृश्य तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसकी आत्मा में गहरे उतरकर प्राणों में संचरण करने लगता है। यह संकेत करता है कि

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

प्रकृति का सौंदर्य केवल आँखों से नहीं देखा जाता बल्कि वह मन और प्राणों में उतरकर संवेदना का हिस्सा बन जाता है-

"झर रहे मौलश्री.../रात भर होता रहा/ मौलश्री झरण,/निःशब्द गगन-/करते रहे/प्राणों में/ संचरण;/ अंजुरी भर-भर बरसाए तुमने/गंधाती देह/ बनी मौलश्री, /जान लिया/परस तुम्हारे/क्यूँ कर बनते/ कंचन।" [3]

प्रकृति में सौंदर्य और आश्चर्य दोनों छिपे हैं। चाँद, तारे, पेड़ और फूल ये सब मात्र प्राकृतिक तत्व नहीं, बल्कि कवयित्री की कल्पना में जीवित चरित्र हैं। यदि हम संवेदनशील दृष्टि से प्रकृति को देखें, तो हर दृश्य में सौंदर्य और नई अर्थवत्ता का अनुभव कर सकते हैं। बालसुलभ संवेदना और प्रकृति के रमणीय सौंदर्य का मनोहारी चित्रण करती कविता 'सच कहता हूँ देखा मम्मा' में कवयित्री ने बालक की दृष्टि से प्रकृति को देखा है, जिससे कविता में सहजता, मासूमियत और कल्पनाशीलता प्रकट होती है। रात्रि का चाँद खिड़की से झाँकता है और ऐसा प्रतीत होता है मानो वह गाँव के किसी पेड़ पर अटक गया हो। यह कल्पना केवल दृश्य नहीं है, बल्कि कवयित्री के मन में उपजी एक कोमल संवेदना है, जो प्रकृति को जीवंत और सजीव बना देती है। प्रातःकाल जब बालक देखता है कि रात के तारे फूलों में बदल गए हैं, तो यह दृश्य उसके मन में एक अद्भुत आनंद और आश्चर्य उत्पन्न करता है-

"रात चाँद खिड़की से आया,/ था गाँव में पेड़ पर अटका, / सुबह सवेरे देखा मम्मा-/ टिमटिम करते तारे सारे/ फूल बने थे प्यारे-प्यारे।" [4]

कविता चाँद और तारों के माध्यम से रात्रि के सौंदर्य को चित्रित करती है। सुबह के समय तारे-फूल का रूपक रचकर जीवन में आश्चर्य और आनंद का संचार करते हैं । पाठक के मन में प्रकृति के प्रति प्रेम, उत्सुकता और आत्मीयता की भावना जगाती है।

'चीड़-वन' शीर्षक की सभी कविताएँ प्रकृति के विविध रूपों और प्राकृतिक सौंदर्य के अनूठे बिंबों को साकार करती हैं। कवयित्री ने अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि और गहरी संवेदनशीलता के साथ चीड़ के पेड़ों, धूप और सूर्य की किरणों के खेल को चित्रित किया है-

"ऊपर/ तना है/ चीड़ों का वितान:/ नीचे/ झरती धूप-/ करती/ विश्राम./सूरज ने-/ शिखर चढ़/ खींचा/ किरण-जाल;/ देखो-/ फटे जाल से/ फिसले/ चीड़-घड़ियाल।" [5]

कवयित्री की दृष्टि से चीड़-वन एक अनुशासित, गतिशील, प्रकाशमय और आध्यात्मिक स्थान है, जहाँ पेड़, धूप और सूर्य मिलकर एक सौंदर्यलोक की रचना करते हैं। इन कविताओं के माध्यम से प्रकृति का सौंदर्य पाठक के मन में शांति, आनंद और संवेदना का संचार करता है।

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

'देवदार और धुँध' शीर्षक से कवयित्री ने अनेक कविताओं का सृजन किया है. कवयित्री ने देवदार और धुँध के माध्यम से प्रकृति को मानवीय भावनाओं और जीवन-गतिविधियों से जोड़कर प्रस्तुत किया है। कहीं वे शांत और निद्रामग्न हैं, कहीं चंचल और शरारती, कहीं यौवन से भरपूर और कहीं तपस्वी। इस प्रकार कविता प्रकृति के विविध रूपों का सूक्ष्म, जीवंत और संवेदनशील चित्रण प्रस्तुत करती है-

"ढाँप रहे हैं/ अपना यौवन/ बदरंग, / तार-तार/ धुन्धियाई चादर से/ देवदार झाँक रहा है/ देवदार/ बाला का-/सुडौल यौवन, / घने कुहासे की/ चोली पहन बार-बार/उतारते हैं;/ निद्रमग्न/ शिशु देवदारों के-/ अपने धुँध के लिहाफ़ सोने की तैयारी में/ शरारती/ देवदार शिशु/ झाँकते हैं बाहर/ चिढ़ाते हैं/ उतार/ चादर/ धुँध की।" [6]

संपूर्ण कविता में देवदार वृक्ष, धुँध, ओस, पगडंडियाँ और वन की नीरवता के माध्यम से एक अद्भुत दृश्य-रचना उपस्थित होती है, यहाँ प्रकृति केवल दृश्य नहीं रहती, वह जीवंत चरित्र के रूप में सामने आती है. चंचल डोगरा की कविताओं में प्रकृति का सौंदर्य मनुष्य के अंतर्मन से जुड़कर एक भावनात्मक और दार्शनिक अनुभव बन जाता है।

प्रकृति और सौंदर्यबोध का सामंजस्य

चंचल डोगरा की कविता में प्रकृति और सौंदर्यबोध का सामंजस्य अत्यंत प्रभावशाली ढंग से उभरकर आता है। उनकी रचनाओं में प्रकृति जीवन की संवेदनाओं, भावनाओं और अस्तित्व के गहरे अनुभवों को व्यक्त करने का सशक्त प्रतीक बन जाती है। वे पहाड़, नदियों, वनस्पतियों, और प्राकृतिक दृश्यों के माध्यम से जीवन के सौंदर्य और संघर्ष दोनों को चित्रित करती हैं। उनके सौंदर्यबोध में मानवीय अनुभवों की गहराई, आत्मीयता और आध्यात्मिकता सम्मिलित है। उनकी कविता में प्रकृति और सौंदर्यबोध का सामंजस्य जीवन के विविध रंगों, संवेदनाओं और मानवीय मूल्यों का गहन अनुभव कराता है। सच्चा सौंदर्यबोध वही है जो प्रकृति, जीवन और समय – तीनों के बीच संतुलन स्थापित करे। कवयित्री के लिए प्रकृति सिर्फ दृश्य नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन का माध्यम है-

"शायद/ खोला होगा रंभाते बछड़े को/ और/ प्यार से सहलाया होगा/ कामधेनु को/ ज्यों सहलाया हो बीता कल/ डाला होगा दाना मुर्गियों को/ हथेली पर रखे चूज़े में/ सपनीली आँखों/ देखा होगा/ नश्वर जीवन।" [7]

कवयित्री जीवन और प्रकृति के गहरे सामंजस्य को बड़ी सादगी से व्यक्त करती है। ग्रामीण जीवन के छोटे-छोटे दृश्य – जैसे रंभाते बछड़े को खोलना, गाय-बैलों को सहलाना, मुर्गियों को दाना डालना, हथेली पर चूज़ों को रखना – के माध्यम से प्रकृति और मनुष्य के आत्मीय संबंध को उकेरा है।

इस तरह कविता प्राकृतिक सौंदर्य और यथार्थ जीवन दोनों का संतुलित चित्र प्रस्तुत करती है। कविता यह एहसास कराती है कि जीवन का सुख प्रकृति से जुड़े रहने और उसकी सादगी को जीने में है।

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

"हिम पर्व" कविता में हिमाच्छादित प्राकृतिक दृश्य को इतने सजीव और संवेदनशील रूप में चित्रित किया गया है कि पाठक स्वयं को उस हिम-पर्व के मध्य खड़ा अनुभव करता है। यह कविता प्रकृति के सौंदर्यबोध और मनुष्य के भीतर उत्पन्न संवेदनाओं के सामंजस्य का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है। बर्फ़ के धीरे-धीरे उतरने का दृश्य मानो किसी अतिथि के आगमन जैसा है। बर्फ़ का आहिस्ता-आहिस्ता उतरना, दबे पाँव आँगन में आना, और द्वार पर बर्फ़ की बंदनवार बाँधना, प्रकृति को उत्सव का रूप प्रदान करता है। कवयित्री यहाँ बर्फ़ को निश्चेष्ट नहीं रहने देती, बल्कि उसे क्रियाशील, चंचल और उत्सवधर्मी बना देती है-

"हिम पर्व/पहले डाला/ बर्फ़ ने/ डेरा/ चिनारों पर;/ जमी आहिस्ता-आहिस्ता/ दबे पाँव फिर/ आँगन में/ बँधने लगे/ बर्फ़ बंदनवार/ द्वार पर/ आँगन में…….।" [8]

'शहर से दूर' नामक कविता प्रकृति के सौंदर्य और संवेदनशीलता को अत्यंत आत्मीय और भावपूर्ण ढंग से चित्रित करती है। कवयित्री ने धौलाधार पर्वतों के जंगल, घने दरख़्तों, बदलते मौसम, बादलों, धूप, धुंध और बरखा को मानवीय संवेदनाओं से जोड़ दिया है। प्रकृति का मानवीकरण और उसके साथ कवयित्री का भावात्मक संवाद ही कविता का मुख्य प्रतिपाद्य है. धूप और बादलों के खेल में उनको जीवन की चंचलता और उत्सवप्रियता दिखती है। धुंध और बरखा उनके मन में रहस्य और रोमांच जगाते हैं। वह स्वयं को इस सम्पूर्ण प्रकृति का अंग मानती हैं-

"शहर से दूर / धौलाधार पर्वतों के/ जंगल में-/ घने दरख्तों के बीच/ तुम्हारा.../ आशियाना;..... धुले-धुले शिखर, जंगल/ गुलमोहर , चीड़ों में/ तुम्हारा आशियाना/ अच्छा लगता है। " [9]

कवयित्री का मन प्रकृति के हर परिवर्तन, हर रंग, हर खेल में अपना साथी, अपना संवाद पाता है। मानवीकरण के माध्यम से उन्होंने प्रकृति को जीवंत, चंचल और आत्मीय बना दिया है। कवयित्री हमें यह बोध कराती हैं कि प्रकृति के साथ संवाद करके ही मनुष्य अपने भीतर के सौंदर्य, आनंद और शांति को पहचान सकता है।

प्रकृति के विभिन्न उपादानों यथा - पेड़-पौधों का उल्लेख

चंचल डोगरा की कविताओं में पप्राकृति-सौंदर्य जीवन, संवेदना और संस्कृति का अभिन्न अंग है। उन्होंने अपनी रचनाओं में अनेक प्रकार के पेड़-पौधों, फूलों और फसलों का उल्लेख किया है, जो उनकी प्रकृति संबंधी दृष्टि को गहराई से समझने का अवसर प्रदान करते हैं। उनकी कविताओं का सूक्ष्म अध्ययन करने पर उनके पेड़-पौधों संबंधी विस्तृत और व्यापक ज्ञान के बारे में पता चलता है. उन्होंने मौलश्री, चीड़, कमल, देवदार, चिनार, पॉपलर, शहतूत, ओक, ज्वार, बाजरा, आम, बरगद, अशोक, गुलमोहर, कल्पतरु, सेवार, चंपा, चमेली, मालती, मोगरा, गुलाब, नारियल, सरू, नीम, बोगनवेलिया, पलाश और गेंदा आदि वनस्पतियों को अपनी कविताओं में स्थान मोगरा है । ये सभी वृक्ष और वनस्पतियाँ केवल प्राकृतिक वस्तुएँ न होकर कवयित्री के जीवन-दर्शन, भावनाओं और प्रतीकों के वाहक बन जाते हैं।

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

मौलश्री, देवदार, चीड़ और चिनार जैसे वृक्ष उनकी कविताओं में पहाड़ी अंचल के वातावरण और उसकी गरिमा को प्रकट करते हैं। ये वृक्ष स्थायित्व, दृढ़ता और सहनशीलता के प्रतीक बनते हैं। चीड़ और देवदार की महकती छाँव में कवयित्री को जीवन की गहराई और आध्यात्मिक शांति का अनुभव होता है-

"जोगी देवदार/ धुँध की झोली फैलाए-/ नापते पगडंडी/ आ पहुंचे-/ सड़क किनारे;/ भिक्षाम् देहि की/ धूनी रमाए/ गुहार लगाए।" [10]

चिनार और पॉपलर ऋतुओं के बदलते चक्र को दर्शाते हैं और कवयित्री इनके माध्यम से जीवन के उतार-चढ़ाव को व्यक्त करती हैं-

"बर्फ़ीले जंगल/ चिनारों की बर्फ़ीली छतरियाँ/लिए/ पौपलर के बर्फ़ीले डंडे/ उठाए ।" [11]

कमल, चंपा, चमेली, मालती, मोगरा और गुलाब जैसे फूल उनकी कविताओं में कोमलता, प्रेम और सौंदर्य के प्रतीक हैं-

"लुटाते हैं हवाओं पर/ उसके/ रेशमी स्पर्श के सुवास/ चंपा, चमेली, मालती/ मोगरा और गुलाब।" [12]

कमल विशेष रूप से आध्यात्मिक पवित्रता और जीवन संघर्ष के बाद उभरने वाली उज्ज्वलता का प्रतीक है। गुलमोहर और पलाश उनकी कविताओं में रंगों के उत्सव की तरह हैं जो जीवन में उल्लास और ऊर्जा का संचार करते हैं-

"जिसकी नींद में/ डालती थी खलल चहचहाहट/ चिड़ियों की भी/ दहकते पलाश पर/ ता थैय्या नाचती/ गा रही है मल्हार।" [13]

कवयित्री ग्रामीण जीवन की स्मृतियों को भी अपनी कविता में सजीव करती हैं। ज्वार और बाजरे की फसलें मेहनतकश किसानों के श्रम और आत्मनिर्भरता का प्रतीक हैं-

"गाँव के कच्चे आँगन में/ गाँव की लड़कियाँ/ राहड़े गाढ़ती थीं/ ज्वार, बाजरा मिला सतनाजा/ बोती थीं।" [14]

आम और बरगद गाँव की संस्कृति, रिश्तों की जड़ों और सामूहिक जीवन के केंद्र हैं-

"पक्का था वह/ आँगन कच्चा, / नहीं कहीं थी/ आम की बगिया/ कोने में था बरगद अब भी/ लटक रही थी/ पींग की रस्सी।" [15]

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

नीम, नारियल और कल्पतरु जैसे वृक्ष उनके यहाँ औषधीय और जीवनदायी गुणों के कारण प्रकृति की उदारता और करुणा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चंचल डोगरा ने आधुनिक जीवन में प्रकृति के कृत्रिम और सीमित रूप को भी रेखांकित किया है। बोनसाई का उल्लेख वहाँ है जहाँ वे मनुष्य द्वारा प्रकृति को बाँधने, नियंत्रित करने और सीमित करने के प्रयासों पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। यह उनकी पर्यावरणीय चेतना का महत्वपूर्ण पहलू है, जिसमें वे पाठक को यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि क्या हम प्रकृति के मूल स्वरूप का सम्मान कर रहे हैं या केवल अपनी सुविधा के अनुसार उसे ढाल रहे हैं- "**विशालकाय मैं/ बन बोन्साई/ विवश, दीन-हीन, असहाय/ किस्मत पर अपनी रहा/ इतरता/ मैं बनचर…….**"**[16]**

इस प्रकार, चंचल डोगरा की कविताओं में पेड़-पौधे मात्र सजावटी तत्व नहीं हैं, बल्कि जीवन, संघर्ष, प्रेम, स्मृति, आध्यात्मिकता और पर्यावरणीय चेतना के प्रतीक हैं। वह प्रकृति को केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं मानतीं, बल्कि उसे जीवनदायिनी शक्ति, सांस्कृतिक धरोहर और मानवीय संवेदनाओं के विस्तार के रूप में देखती हैं। इन पेड़-पौधों के माध्यम से वे यह संदेश देती हैं कि प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व में ही जीवन की वास्तविक पूर्णता और संतुलन निहित है।

प्रकृति और सामाजिक यथार्थ

चंचल डोगरा की कविताओं में प्रकृति और सामाजिक यथार्थ का गहरा और संवेदनशील चित्रण मिलता है। उनकी कविता में प्रकृति केवल सुंदरता का साधन नहीं है, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ से भी जुड़ी है। उन्होंने कश्मीर की त्रासदी, उसकी प्रकृति और वहाँ के सामाजिक यथार्थ को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है-

"कौन जानता था/ एक ही सड़क मापते हुए/ तुम्हारी भव्यता को/ उतारना होगा/ स्मृतियों से/ नेहरु पार्क तक जाने के लिए भी/ सन्नाटे की काई को/ चीर, गुज़रना होगा/ दहला देंगी/ मौन चीत्कारों के कफ़न में लिपटी/ डल की सुबकियाँ/ ..... कौन जानता था/ चहचहाता, गुनगुनाता/ शाही चश्मा/ किलकारियों, उन्मुक्त ठहाकों, प्रेम-प्रसंगों/ मनुहारों को बटोर/ साधक बन/ एकांतवास करेगा।" [17]

कविता कश्मीर की बदलती तस्वीर को रेखांकित करती है जहाँ कभी जीवन उल्लास, प्रेम और प्रकृति की सुंदरता से भरपूर था, वहीं अब आतंकवाद, हिंसा और भय का सन्नाटा छा गया है। कवयित्री आश्चर्य और पीड़ा के साथ यह प्रश्न उठाती हैं कि किसने सोचा था कि यह स्वर्ग जैसी भूमि, जो कभी किलकारियों, चहचहाटों और सांस्कृतिक जीवंतता से गूंजती थी, इतनी बदल जाएगी।

प्रकृति के प्रतीक–डल झील की सुबकियाँ, कमल-डोडों की परतें, शाही चश्मा–यहाँ एक समय के जीवन और सौंदर्य के साक्षी हैं, किंतु आज वे भी मानो शोक में डूब गए हों। स्मृतियों से नेहरू पार्क तक जाना अब

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

केवल भौगोलिक यात्रा नहीं, बल्कि मानसिक संघर्ष भी बन गया है, क्योंकि आतंकवाद ने हर राह पर डर और सन्नाटे की परतें बिछा दी हैं। आतंक और हिंसा ने वहाँ के सांस्कृतिक जीवन को तोड़ डाला है। यह कविता उस विडंबना को प्रकट करती है कि सभ्यता और संस्कृति के बीज खोजने वाली आशा भी अब थक चुकी है। इस कविता के माध्यम से कवयित्री कश्मीर में आतंकवाद के कारण बदलते प्राकृतिक और सामाजिक परिदृश्य का गहरा और मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है।

पर्यावरणीय चेतना और पारिस्थितिक दृष्टिकोण

आज जब प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता का संकट गहराता जा रहा है, तब पर्यावरणीय चेतना और पारिस्थितिक दृष्टिकोण का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह हमें सिखाता है कि विकास और प्रगति के साथ-साथ प्रकृति का संतुलन बनाए रखना भी अत्यंत आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन योग्य पृथ्वी सुरक्षित रह सके। 'मैं वहाँ हूँ' कविता के माध्यम से कवयित्री प्रकृति और सामाजिक यथार्थ, दोनों के गहरे अंतर्संबंध को सामने लाती हैं. यहाँ वह केवल प्राकृतिक दृश्य का वर्णन नहीं कर रहीं, बल्कि मनुष्य, प्रकृति और समाज के बीच बिगड़ते रिश्तों को उजागर कर रही हैं-

“इतना कुछ हो गया/ और/ तुमने कुछ/ लिखा भी नहीं/ मेरे, कुलांचे भरते हिरण/ वे उठा ले गए/ और/ तुमने बतलाया भी नहीं/ जला दिए गए/ मेरी चिड़ियों के घोंसले / शहतूत पर/ मधुमक्खियों के छत्ते के बहाने/ और / मुझे खबर भी न दी” [18]

कवयित्री समाज की उस हिंसक और असंवेदनशील प्रवृत्ति को उजागर करती है, जिसमें हिंसा और विनाश साधारण हो गए है। इस कविता के माध्यम से कवयित्री प्रकृति और समाज के बीच गहरे संबंध को रेखांकित करती हैं। जब प्रकृति पर हमला होता है, तो समाज की आत्मा भी घायल होती है। चिड़ियों के घोंसले और मधुमक्खियों के छत्ते केवल जैविक संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि वे सामूहिक जीवन, सहयोग, संगीत और श्रम-संस्कृति के प्रतीक हैं। उनका जलना जीवन की लय के टूटने का संकेत है। सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से यह घटना आज के समय के हिंसक और उपभोक्तावादी रवैये की ओर इशारा करती है। मनुष्य का स्वार्थ इतना बढ़ गया है कि वह अपने स्वार्थ और सुविधा के लिए अन्य जीवों के जीवन और आश्रय को नष्ट करने से नहीं हिचकता। यह पूंजीवादी सोच, पारिस्थितिकी के संकट और संवेदनहीन समाज की आलोचना भी है।

आज के समय में जब ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट गंभीर समस्या बन चुके हैं, चंचल डोगरा का काव्य अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है। उनकी कविताएँ चेतावनी देती हैं कि मनुष्य की असीम लालसा प्रकृति को नष्ट कर रही है, और अंततः यह मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरा है। इस प्रकार, उनकी कविता केवल सौंदर्य का चित्रण नहीं करती, बल्कि पर्यावरणीय सरोकारों को भी गहराई से प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष

चंचल डोगरा की कविताएँ प्रकृति के सौंदर्य और संवेदना की गहरी समझ प्रस्तुत करती हैं। वे प्रकृति को जीवन की सार्थकता और संतुलन की वाहक मानती हैं। उनकी कविता में प्रकृति का सौंदर्य मानवीय अनुभवों, संघर्षों और सपनों से जुड़कर एक नई अर्थवत्ता प्राप्त करता है।

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

इस शोध-पत्र से यह स्पष्ट होता है कि चंचल डोगरा की कविताएँ न केवल सौंदर्यपरक हैं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय सरोकारों से भी जुड़ी हैं। वे हमें यह याद दिलाती हैं कि प्रकृति का सम्मान करना, उसे संरक्षित रखना और उसके साथ सह-अस्तित्व बनाना ही मनुष्य के अस्तित्व का आधार है।

अतः यह कहा जा सकता है कि 'चंचल डोगरा की कविता में प्राकृतिक सौंदर्य और संवेदना: एक आलोचनात्मक अध्ययन' विषय आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है और यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय और मानवीय संदेश है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. चंचल डोगरा - रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 95-96
2. रमेश मेहता – 'रूह तक पहुँचती है कविता' की भूमिका
3. चंचल डोगरा - रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 17
4. चंचल डोगरा - रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 150
5. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 19-29
6. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 45-51
7. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 86
8. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 53-54
9. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 105-106
10. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 51
11. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 53
12. चंचल डोगरा- रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 117
13. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 140
14. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 77
15. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 78
16. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 81

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
Volume 2, Issue 1, Jan-March 2026

17. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 33-34
18. चंचल डोगरा -रूह तक पहुँचती है कविता- प्रकाशक देवमंजर, सिद्धडा जम्मू, पृष्ठ संख्या- 55